❑लोकगाथा

हर्ष-जीण री लोकगाथा (अंस)

पाठ परिचै

राजस्थान रै सीकर जिलै रै मांय लूंठा पहाड़ां माथै हर्ष अर जीण माता रा जगचावा मिंदर है। जीण रौ मूळ नांव जीवणी हौ, जिकी घंघराय री बेटी ही। घंघराय चूरू जिलै रै घांघू गांव रा राजपूत सरदार हा। आं रै अेक बेटौ अर अेक बेटी जलम्या। बेटै रौ नांव हर्ष हौ अर बेटी रौ जीण। जीण रौ बाळपणै रौ नांव जीवणी हौ। दोनूं भाई-बैन में अणूतौ हेत हौ। हर्ष अर जीण रा मां-बाप आं रै बाळपणै में ई सुरग सिधारग्या, पण सुरगधाम जावण सूं पैलां हर्ष नैं भोळावण देयनै गया कै जीण नैं किणी भांत रौ दुख नीं होवणौ चाईजै। पर-घर सूं आवण वाळी भावज (भोजाई) उणनैं किणी भांत रा फोड़ा नीं भुगतावै। म्हां दोन्यां रा जीव इणी भोळी चिड़कली री चिंत्या में अटक्योड़ा है। तद हर्ष आपरै मां-बाप नैं पतियारौ दिरावै कै थे नचींता रैवौ, म्हैं म्हारी बैन नैं फूल री दांई राखूंला, इणमें किणी भांत रा फोड़ा नीं पड़ण देवूंला।

मां-बाप रै सुरगवास पछै हर्ष रौ ब्यांव होवै। केई दिनां तांई तौ नणद-भावज में हेत-हिंवळास बण्यौ रैवै, पण फेर भावज रै मन मांय खोट बापरै अर वा नणद नैं आडा-टेढा बोल बोलती रैवै। जीण घुटती-अमूझती रैवै, पण भाई नैं कीं नीं बतावै। अेक दिन तळाब सूं पाणी रा मटका लावती वेळा भावज आपरी नणद जीण सूं कैयौ कै थूं म्हनैं मटकौ ऊंचादै, थनैं दासी ऊंचा देसी। जीण बोली, ''थांनैं घणौ गुमान है म्हारै भाई माथै, जद इज अैड़ा बोल बोल्या हौ, म्हैं तौ दासी रै हाथां मटकौ आज ऊंचूं न काल!'' भावज बोली, ''म्हारा इज काळा चाब्योड़ा हा, जिकौ अैड़ी आफत सूं भेंटा होया, ठाह नीं, कद आगलै घरै जासी, कै भाई इज रैयसी ?'' भावज रा अैड़ा बोल सुणनै जीण उणी खिण खण ले लीन्यौ कै नीं तौ म्हैं कदैई ब्यांव करूंली अर नीं पाछी घरां बावडूंली। जीण नैं बठै इज छोडनै भावज दासी सागै पाछी घरां आयगी। जीण नैं नीं देखनै हर्ष नैं चिंत्या होयी तौ जीण री भावज कैयौ कै जीण तौ रूसणौ करनै सरवर रै कांठै ई रैयगी है। हर्ष इत्तौ सुणतां ई भाजतौ-न्हासतौ सरवर पूग्यौ तौ बठै जीण नीं ही। उण रा पग दिखणादी दिस कानी मंड्योड़ा दीठा तौ वौ उणरै पगां-पगां सरपट्यौ। थोड़ी दूर गयां पछै उणनैं जीण निगै आई। वौ उणनैं मनावतौ थकौ पाछी घरां चालण री मनवारां करी, पण जीण कैयौ कै चायै परकत आपरा नेम-कायदा बदळ देवै, पण म्हैं म्हारै कौल-बचन सूं पाछी नीं टळूं। इणी सरवर रै कांठै भावज साम्हीं सूरज भगवान री साखी में म्हैं जकौ खण लियौ है, उणनैं निभावूंली। हर्ष उणनैं घणी ई समझायी अर कैयौ कै मां-बाप नैं मरती वेळा म्हैं बचन दियौ हौ कै जीण नैं कदैई कोई दुख नीं होवण देवूंला। थारै वास्तै ऊजळा चावळ, हरिया मूंगां री दाळ अर भूरी भैंस रै घी रौ जीमण परोसूंला। रतनां सूं जड़्योड़ी चौकी माथै सोनै रौ थाळ अर पालर पाणी सूं भरवायनै झारी रख देवूंला। पछै आपां बैन-भाई सागै जीमांला अर बीच-बीच में गासिया ई बदळांला।

जीण कैयौ कै अबै तौ जे आगलै जलम में अेक ई मां रै पेट सूं जलम लेवांला, तौ भलां ई सागै जीमांला, इण जलम में तौ अैड़ौ कीं ई नीं होवैलौ। अैड़ौ सरंजाम तौ अबै भावज सारू ई करौ। चायै सिखर चढ्योड़ौ सूरज पाछौ मुड़ जावै, पण म्हैं तौ अबै पाछी नीं चालूं। जीण रौ पक्कौ निस्चै जाणनै हर्ष अेकर फेरूं मनावणौ चायौ, तौ जीण कैयौ कै भाई हर्ष, थूं म्हनैं कांई मनावै, म्हनैं तौ आखी दुनिया मनावैली, राजा-बादसाह मनावैला। थूं पाछौ घरां बावड़जा। भोजाई थारी बाट देख रैयी होसी। हर्ष ई मन में धार लीनी कै जे जीण नीं मुड़ै तौ म्हैं ई पाछौ नीं मूडूं। जीण रै सागै हर्ष ई दिखणादी दिस आगै बधतौ रैयौ अर सीकर कनै दो लूंठा भाखरां माथै जायनै तप करण लाग्या। जीण कैयौ कै बैन-भाई आम्हीं-साम्हीं नीं बैठ्या करै, तद हर्ष जीण नैं पीठ देयनै तप में लीन होयग्यौ। दोनूं भाखर

हर्ष-जीण रै नांव सूं ओळखीजण लाग्या। बठै हर्ष अर जीण रा मिंदर बणग्या। जीण माता रौ जस दिल्ली रै बादसाह तांई पूग्यौ तौ वौ मिंदर माथै चढाई कर दीनी। जीण माता आपरै भौंरां री सेना बादसाह रा तंबुआं में भेज दी। बादसाह रा सिपायां रा डील सूजग्या। वै डरता पाछा बावड़ग्या। दिल्ली रौ बादसाह जीण माता नैं धोकण लागग्यौ। हर्षनाथ रै मिंदर कनै वि. सं. 1030 (बुधवार, 18 जनवरी, 973 ई.) रौ अेक सिलालेख मिल्यौ, जिकौ सीकर रै संग्रहालय मांय है। इणमें केई चौहान राजावां रा नांवां रौ जिकर है। जीण माता रै मिंदर रा पुजारी पारासर गौत रा बिरामण अर सांभरिया खांप रा राजपूत है। अठै आयै बरस चैत अर आसोज रै च्यानण-पख में मेळौ भरीजै अर जात-झडूलै सारू सैंग जात रा लोग आवता ई रैवै। कैबत है कै 'जिण न देखी जीण, वौ जग में के कीण?' मतलब कै जकौ जीण माता रा दरसण नीं करयौ, वौ जग में आयनै कांई करयौ?

हर्ष-जीण री लोकगाथा (अंस)

(सरवर कांठै सूं दर-कूचां— दर-मजलां दिखणद कानी जावती जीण आपरै भाई नैं झूरै ही—)

हरसा बीर मेरा रे, मा बाबल खोस्या मेरा राम।
जामण का रे जाया, जलमी को जायो भावज खोसियो।।
हरसा बीर मेरा रे, मेरा कुळ में कोई साथी नांय।
जामण का रे जाया, अंबर तो पटकी रे धरती सांभळी।।
हरसा बीर मेरा रे, जे मेरी होती जुग में माय।
जामण का रे जाया, अखन कंवारी नै नांय बिडारती।।
हरसा बीर मेरा रे जे मेरो जीतो होतो बाप।
जामण का रे जाया, अखन कंवारी नै कदियेन काढतो।
हरसा बीर मेरा रे, राव गढां रे करतो ब्याव।
मेरी मा का रे जाया, घुड़ला तो हसती रे देतो घूमता।।
हरसा बीर मेरा रे, मा बाबल आवै म्हारै याद।
जामण का रे जाया, नैणां चौमासो रे म्हारै लग रह्यो।।

(हे भाई हर्ष! मां-बाप नैं तौ भगवान खोस लिया अर सागी भाई नैं भावज। अबै इण घर में म्हारौ कुण है? म्हनैं तौ आभौ पटकी अर धरती झेली। हे भाई, जे आज मां जींवती होवती तौ आपरी अखन कंवारी बेटी नैं इयां नीं बिसारती अर जे बापू होवता तौ घर सूं कदैई नीं काढता। वै किणी गढपति सागै म्हारौ ब्यांव करनै हाथी-घोड़ा दायजै में देता। हे म्हारा मा-जाया भाई हर्ष! म्हनैं मा-बाप याद आय रैया है अर आंख्यां सूं सावण-भादवै री झड़ी लाग रैयी है।)

हरसा बीर मेरा रे, के थारै घर में रै पांती मांगती?
के थारो लेती राज बंटाय?
जामण का रे जाया, किस विध बिडारी रै छोटी भाण नै।।
हरसा बीर मेरा रे, कै तो मैं लेती धरम की चूनड़ी।
के तो मैं लेती आंगी बांय।
मेरी मा का रे जाया, देतो तो लेती रै पगां री मोचड़ी।।

(ज्यूं-ज्यूं जीण नैं आपरौ अपमान चेतै आवै, त्यूं-त्यूं उणरी रीस बधती जावै अर वा भाई सूं किरियावर करती थकी कैवै— हे भाई हर्ष! न तौ म्हैं घर में अर न राज में ई पांती मांगी, फेर क्यूं छोटी बैन नैं घर सूं काढी? म्हैं तौ थारी दियोड़ी चूनड़ी, कांचळी अर ज्यादा सूं ज्यादा अेक जोड़ी पगरखी ई लेवती।)

हर्ष री जोड़ायत जद घरां पूगी, तद उणरै आपरी बैन नैं नीं देखनै हर्ष पूछ्यौ कै जीण कठै रैयगी? तद नण-भोजाई रै झगड़ै रौ हाल सुण-समझनै हर्ष आपरौ माथौ पीट लियौ अर तळाब कानी भाज्यौ। बठै जायनै जीण रै पगां री दिस दिखणाद कानी जोयौ। फेर उणी दिस दौड़ पड़्यौ—

इसड़ा तो झुरणा ये जीण सगती झूरती गई,
गई कोस दोय रै च्यार।
देव्यां रा ये देवी कांकड़िये ढळता ये हरसो नावड़्यो।।
जीण मेरी बाई ए मुड़ मुड़ तूं घर नै पाछी चाल।
मेरी मां की ये जाई, हरसो तो ऊबो करै ये मनावणा।।

(इण भांत भाई नैं ओळमा देती-झूरती जीण नैं गांव री कांकड़ सूं कोई च्यारेक कोस रै आंतरै हर्ष नावड़ली अर बोल्यौ, ''हे देव्यां री देवी जीण, पाछी घरां चाल! हे जामण-जायी बैन, थारौ भाई हर्ष थनै खड़्यौ-ऊभौ मना रैयौ है। पण जीण तौ काठी धार राखी ही। वा दर ई नीं मानी अर बोली—)

हरसा बीर मेरा रे मनै मनासी रै बामण-बाणियां।
और मनासी कुळ रा लोग,
मेरी मा का रे जाया, बेटी मनासी रे हाडे राव की।।
हरसा बीर मेरा रे मनैं मनासी राजा मान।
जामण का रे जाया, और मनासी रे दिली रो बादस्या।।

(हे म्हारा भाई हर्ष, थूं म्हनैं कांई मनासी, म्हनैं तौ मनासी आखो राज-समाज। बामण-बाणियां रै सागै आखै कुळ रा लोग म्हनैं मनावैला। हाड़े राव री बेटी अर राजा मानसिंह ई म्हनैं मनावैला। अबै हर्ष करै तौ कांई करै? वौ बैन री सुख-सुविधावां सारू कौल वचन करण लाग्यौ।)

जीण मेरी बाई ये, उजळा रंधाद्यूं ये थांनै चावळ्या,
हरिये मूंगां री बाई नै दाळ,
जामण की ये जाई घीरत घलाऊं ये भूरी झोट को।।

(हे बैन, थारै सारू ऊजळा चावळ अर हरिया मूंगां री दाळ रंधवा देवूंला। सागै भूरी भैंस रौ घी भी परोस देवूंला, पण जीण तौ सैंग सुख-सुविधावां सूं मूंढौ फेर लियौ हौ। वा बोली—)

हरसा बीर मेरा रे, भावज जीमैली उजळा चावळ्या,
भावज जीमैली थारी दाळ।
जामण का रे जाया, घीरत जीमैली रे भूरी झोट को।।

(हे भाई, ऊजळा चावळ, हरिया मूंगां री दाळ अर भूरकी भैंस रौ घी भावज ई जीमसी। जीण रा अैड़ा बोल सुणनै हर्ष रै हियै में हेत हबोळा लेवण लागै। वौ कैवै—)

जीण मेरी बाई ये चोकी ढळवा द्यूं रतन जड़ाव की,
ऊपर लगवा द्यूं सुबरण थाळ।

जामण की ये जाई, झारी भरवाद्यूं ये पालर नीर की।।
जीण मेरी बाई ये ऊंचो सो घालूं ये थांनै बैसणूं,
बैनड़ भाई जीमांला साथ।।
जामण की ये जाई, बिच-बिच बदळांला ये बाल्हा गासिया।।

(हे बैनड़ जीण, थारै खातर रतनां सूं जड़्योड़ी चौकी ढळवायनै उण माथै सोनै रौ थाळ सजायनै पालर पाणी री झारी भरवास्यूं। ऊंचा आसण बिछायनै आपां दोनूं भेळा जीमांला अर बीच-बीच में अेक-बीजै नैं कवा ई देवांला। पण जीण हिमाळै दांई थिर ही। वा ठिमराई सूं बोली—)

हरसा बीर मेरा रे जे ओजूं जलमां रै अेकै माय के,
जद रे जीमांला दोन्यूं साथ।
मेरी मा रा रे जाया जद रे बदळांला बिचला गासिया।।
हरसा बीर मेरा रे आकां कै लागै रै मतीर।
जामण का रे जाया, फोगां कै लागै रे चाये काकड़ी।।
हरसा बीर मेरा रे, खेजड़ियां लागै चाये बोर।
जामण का रे जाया, झाड़ां कै रे लागै चाये सांगरी।।
हरसा बीर मेरा रे, पीपळ कै लागै चाये आम।
जामण का रे जाया, आमां रै लागै चाये पीपळी।।
हरसा बीर मेरा रे, फिरजावै कुदरत का साचल नेम।
जामण का रे जाया, मेरा वाचा पाछा ना फिरै।।
हरसा बीर मेरा रे, सिखर आयोड़ो रे सूरज मुड़चलै।
समै भी गयोड़ो मुड़ जाय।।
मेरी मा का रे जाया, जम पर गयोड़ा रै भंवरा मुड़ चलै।
हरसा बीर मेरा रे, बादळ री बूंनां रै पाछी मुड़ चलै।।
समदर हूं नदियां पाछी जाय,
जामण का रे जाया, जीण आयोड़ी रै पाछी ना मुड़ै।।

(हे मां-जाया भाई हर्ष, अबै तौ जे आगलै जलम में ओजूं अेक ई मां रै पेट सूं जलमांला, तद ई अेकै सागै जीमण जीमांला अर आपस में गासिया ई बदळांला। जीण आपरौ अटळ निरणै सुणावती बोली— हे भाई हर्ष, चायै आकड़ै रै मतीरा लागै, फोगां रै चायै काकड़ी लागै, खेजड़ी रै बोरिया अर झाड़्यां रै सांगरी ई क्यूं नीं लागै, पीपळ रै चायै आम अर आम रै चायै पीपळ-फळ लागै। हे भाई हर्ष, चायै कुदरत रा नेम-कायदा टळ जावै, पण जीण आपरै कौल-बचनां सूं पाछी नीं टळै। चायै सिखर चढ्योड़ौ सूरज पाछौ मुड़ जावै, गुजरेड़ौ समै ई पाछौ बावड़ आवै अर चायै जमराज कनै गयोड़ा जीव ई पाछा आय जावै। हे भाई, चायै बादळां री बूंदां पाछी मुड़ जावै अर समदर सूं नदियां पाछी बावड़ जावै, पण जीण पाछी किणी सूरत में नीं बावड़ै। वा आपरै बचनां माथै थिर है। जद हर्ष नैं पक्कौ पतियारौ होयग्यौ कै अबै जीण पाछी घरां नीं चालैली, तद वौ उणरै रूसणै रौ कारण जाणणौ चायौ—)

जीण मेरी बाई ये के थांनै काढी भावज गाळ।
जामण की ये जाई, के थांनै दीन्या ये ओळमा।।

(हे बाई जीण, कांई थनैं थारी भावज गाळ्यां काढी या थनैं किणी तरै रा मोसा मारया? तद जीण बोली—)

हरसा बीर मेरा रे, सौगन मैं खाई सरवर पाळपर,
आडो तो लीनूं सूरज देव।
जामण का रे जाया, भावज को चाढ्यो रे कळंक उतारस्यूं।।
हरसा बीर मेरा रे, एकण ओदर में रे दोन्यूं लोटिया,
एकै मायड़ को रे चूख्यो दूध।
जामण का रे जाया, अेकै पालणियै रे दोन्यूं झूलिया।।
हरसा बीर मेरा रे, अेकै आंगण में रे दोन्यूं खेलिया,
एकै बाटकियै पीयो दूध।
मेरी मा का रे जाया, एकै थाळकली रै सागै जीमिया।।
हरसा बीर मेरा रे, बैनड़ भाई रो गाढो नेह।
जामण का रे जाया, परघर की दूती रे आय तुड़ाइयो।।

(हे भाई हर्ष, म्हैं सरवर री पाळ माथै सूरज री साखी में सौगन खाई ही कै भावज रो लगायोड़ौ कळंक उतारूंली। हे भाई, आपां दोनूं अेक ई मां रै पेट में लोट्या, अेक ई पालणै में हींड्या, अेक ई कटोरी में दूध पीयौ अर अेक ई थाळी में जीमण जीम्यौ, पण हे भाई, परायै घर सूं आयोड़ी दूती जैड़ी भावज आपणै गाढै हेत नैं तोड़ नाख्यौ। जीण रा अै उद्‌गार सुणनै हर्ष गळगळौ होयग्यौ। उणरी आंख्यां सूं चौसारा चालण लागग्या। वौ संकळप करयौ—)

जीण मेरी बाई ये! इतणी निसासी ये बैनड़ क्यूं हुई?
हरसो तो चालै थारै साथ,
जामण की ये जायी, चाल बसांला ये बनखंड डूंगरां।।

(हे म्हारी बैन जीण! थूं इत्ती अणमनी क्यूं होवै है। म्हैं खुद थारै साथै हूं अर आपां वनखंड अर भाखरां में ई चालनै रैवास कर लेवांला।)

हरसा बीर म्हारा रे, कुण करैलो थारौ राज?
जामण का रे जाया, कुण तो रुखाळैलो पिरजा बापड़ी।
हरसा बीर मेरा रै, मुड़ मुड़ पाछो घर नै जाय।
जामण का रे जाया भावज बिलखै रै थां बिन अेकली।।

(हे म्हारा भाई हर्ष, जे थूं म्हारै सागै चालैला तौ थारौ राज कुण संभाळैला? हे जामण जाया बीर, फेर इण भोळी प्रजा नैं कुण रुखाळैला। इण वास्तै हे हर्ष वीरा, थूं पाछौ मुड़जा अर घरां जा परौ, थारै बिना घरै भावज बैठी अेकली झुर रैयी है।)

गाथा में आगै बैन जीण आपरै भाई हर्ष नैं घणौ ई समझावै, पण वौ नीं मानै अर सेवट बैन-भाई दोनूं भाखरां माथै अपूठा बैठ तपस्या में लीन व्है, आपरी आतमावां रौ उत्सरग करै अर भाई-बैन रै अटूट नेह रै प्रतीक रूप जग में पूजीजै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

खण=प्रण। भोळावण=संभळावण। गासिया=कवा, रोटी रौ कौर। कांठौ=किनारौ, सरवर री पाळ। भावज=भोजाई, भाई री जोड़ायत। बिडारणौ=बिसारणौ, भूलणौ। घुड़ला=घोड़ा। हसती=हाथी। चौमासो=चातुर्मास, बिरखा रुत रा चार महीना। मोचड़ी=पगां री पगरखी, चमड़ै री जूती। झूरणौ=विलाप करणौ, बिलखणौ। घीरत=घी। झोट=भैंस। रतन जड़ाव=रतनां सूं जड़्योड़ी। सुबरण=सोनै रौ, सोनलियौ। पालर नीर =बिरखा रौ पाणी। वाचा=कौल, बचन। जम=जमराज। बूंनां=बूंदां, बिरखां री छांटां। पिरजा=प्रजा, रैयत, जनता।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. हर्ष अर जीण कठै रा पहाड़ां माथै तपस्या करी ?

   (अ) सीकर रा (ब) आबू रा

   (स) देसूरी रा (द) चित्तौड़ रा

   ( )

2. जीण माता रौ बाळपणै रौ नांव कांई हो ?

   (अ) जोती (ब) जतिया

   (स) जीवणी (द) जसोदा

   ( )

3. जीण आपरै भाई हर्ष नैं पाछी घरां जावण सूं क्यूं नटै ?

   (अ) मां-बाप नीं होवण रै कारण (ब) भावज नैं दियोड़ा कौल-बचनां रै कारण

   (स) हर्ष नैं दुख होवण रै कारण (द) दासी री सिकायत रै कारण

   ( )

4. ''के थारो लेती राज बंटाय ?'' हर्ष-जीण री लोकगाथा में आ बात कुण किणनैं कैवै ?

   (अ) बैन आपरै भाई नैं (ब) लुगाई आपरै धणी नैं

   (स) दासी आपरी राणी नैं (द) टाबर आपरै माईतां नैं

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'हर्ष-जीण री लोकगाथा' में हर्ष रौ जीण सूं कांई रिस्तौ है ?
2. पाणी भरण नैं सरवर री पाळ माथै कुण-कुण सागै जावै ?
3. हर्ष अर जीण पहाड़ां माथै जायनै तपस्या सारू किण तरै बैठै ?
4. हर्ष ई घरां पाछौ जावण सूं क्यूं नट जावै ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. हर्ष अर जीण रै बाळपणै री दो घटनावां लिखौ।
2. 'हर्ष-जीण री लोकगाथा' सूं आपां नैं कांई प्रेरणा मिळै ?

3. जीण नैं उणरी भावज कांई मोसा बोल्या हा ?
4. घर सूं निकळ्यां पछै हर्ष नैं जीण किण ठौड़ मिळी ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'हर्ष-जीण री लोकगाथा' रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
2. ''हर्ष-जीण री लोकगाथा भाई-बैन रै अछेह नेह री बानगी है।'' इण कथन नैं लोकगाथा सूं दाखला देयनै पुख्ता करौ।
3. जीण नैं घरां पाछी ले जावण सारू हर्ष कांई-कांई मान मनवार करै अर जीण आपरै कौल-बचनां सूं नीं टळण सारू कांई-कांई दाखला देवै ? दाखलां समेत विस्तार सूं लिखौ।

नीचै दिरीज्यां पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. हरसा बीर मेरा रे, मा बाबल खोस्या मेरा राम।
   जामण का रे जाया, जलमी को जायो भावज खोसियो।।
   हरसा बीर मेरा रे, मेरा कुळ में कोई साथी नांय।
   जामण का रे जाया, अंबर तो पटकी रे धरती सांभळी।।

2. इसड़ा तो झुरणा ये जीण सगती झूरती गई,
   गई कोस दोय रै च्यार।
   देव्यां रा ये देवी कांकड़िये ढळता ये हरसो नावड़्यो।।
   जीण मेरी बाई ए मुड़ मुड़ तूं घर नै पाछी चाल।
   मेरी कां की ये जाई, हरसो तो ऊबो करै ये मनावणा।।

3. हरसा बीर मेरा रे, पीपळ कै लागै चाये आम।
   जामण का रे जाया, आमां रै लागै चाये पीपळी।।
   हरसा बीर मेरा रे, फिरजावै कुदरत का साचल नेम।
   जामण का रे जाया, मेरा वाचा पाछा ना फिरै।।